Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 8 | AUGUST 2026

असम की तिवा जनजातियों की पारंपरिक और सामाजिक व्यवस्थाएँ

KAILASH CH CHAUHAN [1]

[1] ASSISTANT PROF., DEPARTMENT OF GEOGRAPHY, GHANAKANTA BARUAH COLLEGE, MORIGAON.

ABSTRACT:

तिवा समुदाय असम की महत्वपूर्ण आदिवासी जनजातियों में से एक है, जो अपनी समृद्ध पारंपरिक और सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए जाना जाता है। इनका समाज वंश-आधारित नातेदारी, पारंपरिक कानूनों, ग्राम परिषदों और सदियों पुरानी सामाजिक प्रथाओं के इर्द-गिर्द संगठित है; ये व्यवस्थाएं विवाह, उत्तराधिकार, सामूहिक कार्यों और विवादों के निपटानेकेलिए नियंत्रित करती हैं। सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में पारंपरिक नेतृत्व प्रणालियों, धार्मिक मान्यताओं और ग्राम संस्थाओं की अहम भूमिका होती है। तिवा समुदाय त्योहारों, मौखिक परंपराओं, लोक नृत्यों और कृषि पद्धतियों के माध्यम से अपनी विशिष्ट जीवनशैली को भी संजोए रखेहुए है। हालांकिआधुनिकीकरण और सामाजिक बदलावों ने उनकी पारंपरिक व्यवस्थाओं को प्रभावित किया है, फिर भी यह समुदाय अपने मूल मूल्यों और सामूहिक एकजुटता को बनाए हुए है। यह लेख तिवा सामाजिक व्यवस्था की संरचना, कार्यों और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालता है और दिखाता है कि यह किस प्रकार असम की जनजातीय विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है।

KEYWORDS:

तिवा समुदाय, सामाजिक व्यवस्था, पारंपरिक नेतृत्व, सांस्कृतिक पहचान, ग्राम परिषद,लोक नृत्य, धार्मिक विश्वास, कृषि पद्धतियाँ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
11th August 2026	12th August 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.21904691	https://zenodo.org/records/21904691

परिचय:-

तिवा जनजाति, जिसे लालुंग भी कहा जाता है, असम और पड़ोसी मेघालय की एक आदिवासी समुदाय है।तिवा शब्द का अर्थ 'ति' का मतलब पानि और 'वा' का श्रेष्ठ निवासी। अर्थातः जल के निकट रहने वाले लोग। ये तिब्बतो-बर्मी नृवंश से संबंधित हैं और उनकी भाषा, रीति-रिवाज, आस्थाएँ और सामाजिक संगठन असम की एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है। तिवाओं की उनके समृद्ध परंपराओं, उत्सवों और प्रकृति व कृषि के साथ घनिष्ठ संबंध के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। उनके सामुदायिक जीवन में विशिष्ट अनुष्ठान, लोक गीत, नृत्य और पारंपरिक पोशाक शामिल हैं जो क्षेत्र विशेष में उनकी दीर्घकालिक निरंतरता को दर्शाते हैं। तिवा असम के महत्वपूर्ण जनजातियों में से एक है। तिवाएँ असम राज्य की सांस्कृतिक विविधता और आदिवासी विरासत में महत्वपूर्ण भुमिका निभाती हैं।

उद्देश्य:-

- असम की तिवा जनजाति की पारंपरिक व्यवस्था एँ, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन करना।
- तिवा समाज की वंश, संगठन, नेतृत्व व्यवस्था , विवाह, रीति-रिवाज और धार्मिक विश्वासों को समझना।
- तिवा समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान , निरंतरता और परिवर्तन का मूल्यांकन करना।
- कृषि, उत्सव, अनुष्ठान और सामुदायिक जीवन में पारंपरिक संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन का महत्व-

असम की तिवा जनजातियों की पारंपरिक और सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन इसलिए आवश्यक है , क्योंकि इससे उनकी स्वदेशी शासन-प्रणाली , कबीलाई संरचना और सामुदायिक एकता की गहरी समझ मिलती है। शोध साहित्य में तिवा समाज के पारंपरिक राजनीतिक संस्थानों को समुदाय की पहचान और नियम-प्रवर्तन के केंद्र के रूप में महत्व दिया गया है। कबीला-आधारित व्यवस्था सामाजिक-संबंधों , भूमिकाओं और समन्वय के ढांचे को आकार देती है तथा स्थानीय निर्णय-प्रक्रियाओं को संचालित करती है। साथ ही , समुदाय-नियंत्रित, न्याय-व्यवस्था, विवाद समाधान और सामाजिक अनुशासन बनाए रखने का प्रमुख साधन रही है। ये संस्थाएँ न केवल सामाजिक स्थिरता और सहिष्णुता सुनिश्चित करती हैं , बल्कि सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण और सामाजिक संकटों के समय आत्म-निर्णय की क्षमता भी बढ़ाती हैं। इससे तिवा समाज के लचीलेपन और सामूहिक सहकार्यता के पहलुओं पर परोक्ष रूप से प्रकाश पड़ता है।

कार्यप्रणाली:-

आंकड़ा-संग्रह के स्रोतअध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया हैं|

- प्राथमिक स्रोतों में क्षेत्र-अध्ययन , सहभागी अवलोकन , साक्षात्कार, समूह-चर्चा, तथा स्थानीय परंपरागत पदाधिकारियों जैसे लोरो , डोलोई, ग्राम-बुजुर्ग, महिला प्रतिनिधियों और युवाओं से प्राप्त जानकारी शामिल हैं
- द्वितीयक स्रोतों में शोध-पत्र , पुस्तकों, सरकारी दस्तावेजों, जनजातीय अध्ययन संबंधी लेखों , तथा तिवा समाज पर उपलब्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययनों का उपयोग किया हैं|

प्राप्ति और चर्चा:-

तिवा समाज की सामाजिक व्यवस्था ग्राम-केन्द्रित, कृषि-आधारित और परंपरागत नेतृत्व से संचालित रही है। समुदाय में सामाजिक नियंत्रण, पारिवारिक अनुशासन, कुटुंबीय संबंध और

ग्राम-स्तरीय निर्णय-प्रक्रिया लंबे समय तक सामाजिक जीवन की रीढ़ रहे हैं। असम में तिवा समुदाय को जनगणना में प्रायः "लालुंग" नाम से दर्ज किया गया है; 2011 के उपलब्ध स्रोतों के अनुसार तिवा जनसंख्या लगभग 3,71,000 थी, और उनकी भाषा को भी "Lalung" नाम से दर्ज करते हुए असम में तिवा भाषा-भाषियों की संख्या 31,421 बताई गई है।

तिवा समाज का भौगोलिक फैलाव भी इसकी सामाजिक विविधता को दिखाता है। मैदानों में

रहने वाले तिवा और पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले तिवा—दोनों की जीवन-शैली में कुछ साझा तत्व हैं, लेकिन उनके अनुष्ठान, रीति-रिवाज और सामुदायिक अभ्यास क्षेत्रानुसार भिन्न दिखाई देते हैं। यह अंतर उनकी सामाजिक संरचना को लचीला बनाता है, क्योंकि समुदाय स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार परंपराओं को बनाए रखते हुए परिवर्तन भी स्वीकार करता है।

असम में तिवा आबादी बिखरी हुई बस्तियों के रूप में रहती है ; मैदानी इलाकों में रहने वाले 'समतल तिवा' मुख्य रूप से ब्रह्मपुत्र घाटी में केंद्रित हैं , जबकि पहाड़ी इलाकों में रहने वाले 'पहाड़ी तिवा' की आबादी कम है। जनगणना से जुड़े स्रोतों में इस समुदाय को 'लालुंग' नाम से दर्ज किया गया है और उपलब्ध अनुमानों के अनुसार , 2011 में तिवा/लालुंग आबादी लगभग 3,71,000 थी।

1872-2011 के दौरान असम की तिवा आबादी - तालिका 1

Year of census	population	Year of census	Year of population
1872	34,859	1951	52352
1881	47650	1961	61315
1891	52423	1971	95609
1901	35513	1981	--
1911	39213	1991	143746
1921	41033	2001	170622
1931	43448	2011	371000
1941	51308		

Source of data: - census of India

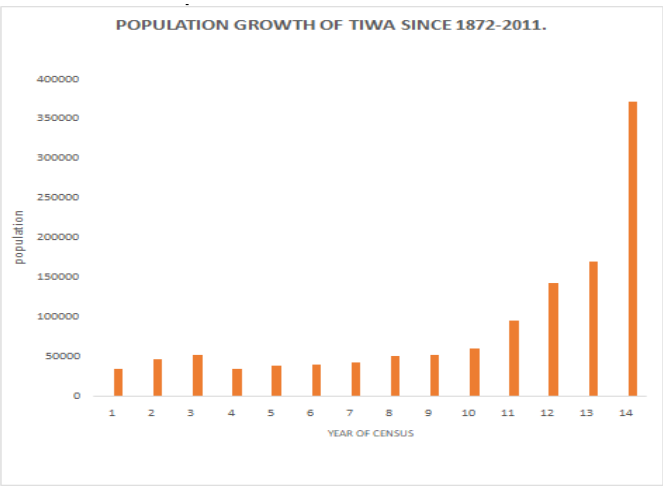

यह तालिका 1872 से 2011 तक तिवा की जनसंख्या को दर्शाती है और दीर्घकालिक वृद्धि की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करती है। कुल मिलाकर, जनसंख्या समय के साथ बढ़ती है, लेकिन यह वृद्धि समान नहीं है, क्योंकि कुछ वर्षों में वृद्धि धीमी रही, एक वर्ष में गिरावट आई, और बाद के वर्षों में बहुत तेज़ वृद्धि हुई।

प्रारंभिक अवधि में, 1872 से 1891 तक, जनसंख्या 34,859 से बढ़कर 52,423 हो जाती है। यह उन दशकों में सामान्य वृद्धि को दर्शाता है। हालांकि, 1901 में जनसंख्या अचानक घटकर 35,513 रह जाती है, जो तालिका में दर्ज एकमात्र प्रमुख गिरावट है।

1901 के बाद जनसंख्या फिर से बढ़ने लगती है। 1911 से 1961 तक वृद्धि धीमी और क्रमिक रहती है, जिसमें जनसंख्या 39,213 से बढ़कर 61,315 तक पहुँचती है। इससे पता चलता है कि यह अवधि अचानक वृद्धि की बजाय मध्यम वृद्धि की थी।

सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन 1961 के बाद, विशेषकर 1971 के बाद दिखाई देता है। जनसंख्या 1971 में 95,609 से बढ़कर 1991 में 143,746, फिर 2001 में 170,622 और अंत में 2011 में 371,000 तक पहुँचती है। यह बाद के दशकों में बहुत तेज़ वृद्धि को दर्शाता है, खासकर 2001 से 2011 के बीच।

मुख त्योहारों का संक्षिप्त परिचय:-

वाँचुवा उत्सव: यहतिवा जनजाति का बहुत महत्वपूर्ण पर्व है, खासकर पहाड़ी तिवा समुदाय में, यह अच्छी फसल के उपलक्ष्य में मनाया जाता है और इसमें गीत, नृत्य, पारंपरिक वेशभूषा तथा अनुष्ठान होते हैं|तिवा त्योहारों में गीत और नृत्य बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्रोतों के अनुसार, तिवा समुदाय में दो प्रकार के लोकगीत विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं: Lo Ho La Hai और Lali Hilali Lai.

जोनबील मेला: यह असम का प्रसिद्ध पारंपरिक मेला है, जिसमें तिवा समुदाय की महत्वपूर्ण भागीदारी रहती है| जोन चन्द्रमा के लिए प्रयुक्त होने वाला एक असमिया शब्द है और बील का अर्थ आद्रभूमि या झील होता हैंयह त्योहार जोनबील झील (एक अर्धचन्द्राकार आकार में है) के किनारेलगता है।जोनबील मेला माघ बिहू (आमतौर पर कटाई के मौसम के अंत में) के दौरान तिवा समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक तीन दिवसीय समुदायिक मेला है जो 500 से अधिक वर्षों से चला आ रहा है।यह हर साल जनवरी के मध्य भागमें दयांग बेलगुरी, जोनबील, असम के मोरीगांव जिले में आयोजित किया जाता है।

यह भारत का इकलौता मेला है, जहाँ कुछ खरीदने के लिए पैसे की जरुरत नहीं पडती है।जिस तरह प्राचीन काल मे वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी। इस त्योहार के दौरान, असम और मेघालय के आदिवासी तथा गैर आदिवासी लोग असमिया माघ बिहू अवधि (मकर संक्रांति) के अंत में कृषि उत्पादों के आदान प्रदान के लिए वस्तु विनिमय प्रणाली को एक उत्सव स्वरूप मनाते है। पहाड़ी इलाकों पर होने वाली जड़ी बूटी, सूखी मछली, अदरक और अन्य उपज जो पहाड़ी क्षेत्र में नहीं उगाया जा सकते उनसे मैदानी भागों से विनिमय किया जाता है।जनजातीय समुदाय जैसे तिवा, खासी, जयंतिया और कार्बी मेले में वस्तु विनिमय के लिए तथा अन्य आदिवासी समुदायों के साथ भाईचारे तथा सद्भाव के साथ मेले का आनंद लेने के लिए अपने उत्पादों के साथ मेले से पहले ही पहाड़ियों से उतर आते है। गोभा राजा दर्बारियों के साथ मेले का दौरा करते हैं। साथ ही अपनी प्रजा से कर एकत्र करते हैं। यहाँ के लोगो के द्वारा आयोजित पारम्परिक नृत्य और संगीत का प्रदर्शन, मुर्गा लड़ाई, मछली पकड़ना, बांस की कोठरी आदि यहां के वातावरण को आनन्दित और मनमोहक बनाती है।

तीन पीसू (बिहू): यह तिवा समुदाय का मौसमी /सांस्कृतिक पर्व है , जो असमिया सांस्कृतिक परंपरा से भी जुड़ा हुआ है |यह विशिष्ट रुप से तिवा नृत्य शैलियों और अनुष्ठानों के साथ मनाया जाने वाला क्रृषि उत्सव है।

बोरोट उत्सव: यह तिवा समुदाय का एक पारंपरिक सामुदायिक उत्सव है। यह उत्सव पूस महीने की पुर्णिमा के दिन मनाया जाता है। यह उत्सव असम के मैदानी इलाकों में रहने वाले तिवा जन जाति के लोक उत्सव होते है। यह समाज को बीमारियों और आपदाओं से बचाने के उद्देश्य से मनाया जाने वाला एक अनुष्ठानिक त्योहार है।

सोगरा पूजा : यह धार्मिक और सामाजिक महत्त्व वाला पर्व है , जिसमें पूजा और सामुदायिक सहभागिता होती है। यह एक पारंपरिक वसंत और फसल की शुरुआत का त्योहार है,जो मुख्य रुप से कृषि प्रधान है। यह उत्सव फरवरी से मार्च के दुसरे सप्ताह तक मनाया जाता है। कार्बि आंगलंग जिले के आमसाइ , मारजंग, लुम्फुई, आमरि, आमखा जनजातियों के बीच मनाया जाता है। नगांव , मोरिगांव और कामरुप जिलों की स्थित तिवा गांवो में यह उत्सव मनाया जाता है। त्योहार की शुरुवात लांगखुन और महादेव की पूजा से होती से होती है, जिसमें बकरी, मुर्गी और अन्य पक्षियों की बलि दी जाति है।

यांगली पूजा: तिवा समाज के यह पूजा एक महत्वपूर्ण कृषि पर्व है जिसे 'लक्ष्मी पूजा' भी

कहा जाता है।यह धान कि बुवाई से ठीक पहले अच्छी फसल और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा की कामना के लिए मनाया जाता है। इसे तीन दिनों तकमनाया जाता है।।

पारंपरिक व्यवस्था

तिवा समुदाय की पारंपरिक व्यवस्था मुख्यतः ग्राम-केन्द्रित होती है। गांवों में स्थानीय मुखिया या पारंपरिक नेतृत्व के माध्यम से सामाजिक निर्णय लिए जाते रहे हैं। समुदाय में भूमि, खेती, विवाह, पर्व-त्योहार और धार्मिक अनुष्ठान सामूहिक जीवन का हिस्सा रहे हैं।

तिवा लोग परंपरागत रूप से कृषि, पशुपालन और वनोपज पर निर्भर रहे हैं। उनके धार्मिक जीवन में पूर्वज-पूजा, लोकविश्वास, और स्थानीय देवताओं की आराधना का विशेष स्थान रहा है। उनकी लोकसंस्कृति में नृत्य, गीत, त्योहार और सामुदायिक समारोह सामाजिक एकता को मजबूत करते हैं।

तिवा विवाह प्रथा:-

वैवाहिक रीति-रिवाज: एक समय तिवा समाज में छह प्रकार के विवाह होते थे। विवाह के अनेक प्रकार प्रचलित हैं , जैसे जल्दबाजी में या अचानक संपन्न विवाह , जबरदस्ती संपन्न विवाह, अपहरण द्वारा संपन्न विवाह, दामाद द्वारा संपन्न विवाह या घर में आयोजित विवाह।

(1) धूम विवाह या अचानक विवाह : यदि विवाह योग्य कन्या के माता-पिता को किसी अवैध संबंध का पता चलता है , या यदि कन्या विवाह योग्य आयु पार कर चुकी है और घर पर रहती है तथा माता -पिता ने पहले ही उसके लिए उपयुक्त वर ढूंढ लिया है , तो वे उसका अचानक विवाह कर देते हैं। यह विवाह घर के माता -पिता द्वारा अत्यंत गुप्त रूप से किया जाता है। कन्या की राय को अनदेखा करते हुए ऐसे विवाह अब तिवा समाज से लुप्त हो चुके हैं।

(2) जबरन विवाह: लड़के का लड़की से विवाह वे दोस्तों या किसी और के ज़रिए राय लेते हैं। अगर लड़की अपनी असहमति ज़ाहिर करती है , तो उसे बदले की भावना से बंधक बना लिया जाता है। कभी -कभी, अगर लड़की को घर से भागने का मौका नहीं मिलता , तो वह लड़के को किसी सभा, उत्सव आदि में उसे पकड़ कर ले जाने का इशारा करती है। लड़कियों की असहमति से होने वाली ऐसी शादियाँ भी तिवा समाज से लगभग लुप्त हो चुकी हैं।

(3) भागकर शादि / अपहरण विवाह: तिवा जनजाति के लोग अपने ही गोत्र में विवाह नहीं कर सकते। इसलिए, यदि कोई लड़का किसी लड़की को विवाह के लिए चुनता है , तो वह पहले यह पता लगाता है कि लड़की किस गोत्र की है। यदि लड़की उसके गोत्र की नहीं है, तो लड़का किसी मध्यस्थ के माध्यम से लड़की से विवाह करने की इच्छा व्यक्त करता है। यदि लड़की लड़के से विवाह करने के लिए सहमत हो जाती है , तो वे दोनों एक निश्चित दिन पर लड़के के घर चले जाते हैं।

(4) घर जमाई या गोभिया :- यदि किसी घर में कन्या के सिवा कोई भी पैतृक संपत्ति का भोग करने वाला न हो , तो कन्या का गोभिया विवाह होता है। कन्या पैतृक संपत्ति की उत्तराधिकारी होती है और परिवार की बरघर की पूजा में भी भाग ले सकती है। खेल गोत्र के लोगों से मुलाकात करके लड़के की राय लेने के बाद ही वे लड़के का विवाह लड़की से करवाते हैं।

(6) बार बिया:- बार बिया प्रथा पड़ोसी हिंदू जातियों की प्रथा के समान ही है, सिवाय इसके कि तिवा जाति अग्नि के बजाय समाज की उपस्थिति में दुल्हन को सौंपती है। इसलिए , यह समझना महत्वपूर्ण है कि दुल्हन को दूल्हे के परिवार में स्थान दिया जाता है।

(7) मृतकों का दाह संस्कार :- तिवा लोग आमतौर पर नदियों के किनारे और धाराओं के पास शवगृह या मकर स्थापित करते हैं। कब्रिस्तान के पास , जहाँ नदी या आग की व्यवस्था नहीं होती, वहाँ दाह संस्कार में भाग लेने वालों के लिए पैर और हाथ धोने की व्यवस्था की जाती है।

तिवा समाज में परिवार और कुटुंब की भूमिका बहुत मजबूत मानी जाती है। सामाजिक संबंधों में सहयोग, पारस्परिक सहायता और सामुदायिक अनुशासन को महत्व दिया जाता है। विवाह, जन्म, मृत्यु और उत्सव जैसे अवसरों पर पूरा समुदाय शामिल होता है।

समय के साथ तिवा समाज में आधुनिक शिक्षा , प्रशासनिक संरचना और राजनीतिक प्रतिनिधित्व का भी प्रभाव बढ़ा है। असम में तिवा स्वायत्त परिषद जैसी व्यवस्थाओं ने उनके सामाजिक-राजनीतिक पहचान को और अधिक संस्थागत रूप दिया है

निष्कर्ष:- तिवा समुदाय असम की एक प्रमुख आदिवासी जनजाति है , जिसकी सामाजिक संरचना ग्राम-आधारित, परंपरागत और सामुदायिक मूल्यों पर आधारित रही है। इस समाज में वंश, विवाह, धार्मिक आस्थाएँ, ग्राम संस्थाएँ, पारंपरिक नेतृत्व और सामूहिक जीवन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। तिवा समाज की विशेषता इसकी समृद्ध लोक -संस्कृति, कृषि पर आधारित जीवन-शैली, लोक-उत्सवों और सामाजिक अनुशासन में दिखाई देती है। तिवा समाज के प्रमुख त्योहार , विवाह प्रथाएँ, धार्मिक अनुष्ठान और लोकपरंपराएँ उनकी विशिष्ट पहचान को सुदृढ़ करती हैं। आधुनिक शिक्षा , प्रशासनिक व्यवस्था और सामाजिक परिवर्तन ने इसकी पारंपरिक संस्थाओं को प्रभावित किया है, फिर भी तिवा समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक एकता को बनाए हुए है। यह लेख तिवा समाज की पारंपरिक और सामाजिक व्यवस्थाओं, उनकी संरचना, कार्यों तथा सांस्कृतिक महत्व का संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत करता है।

REFERENCES

1. बोरदोलोई लखिनंदा 2016, तिवा, असम के पारंपरिक सामाजिक-राजनीतिक संस्थान, पृष्ठ -2

2. डेका डॉ.पंकज तिवा जनगोष्ठिर भाषा-साहित्य संस्कृति (असमिया) (सं.)परफेक्टइमेजेश, राजगढ़ रोड गुवाहाटी-3,पृष्ठ -110

3. भट्टाचार्जी, पी. सी. (एड) (1991), असोमोर जोनोजाती, (असमिया) लॉयर्स बुक स्टॉल, गुवाहाटी, असम

4. देवरी नादिराम, तिवा समाज लोक-उत्तव (असमिया) (संस्करण)परफेक्टइमेजेश,राजगढ़ रोड गुवाहाटी-3 पृष्ठ-195,212

5. सेनापति बलायराम, भयम तिवा सकलार समाज बाबास्थ अरु रीति-नीति (असमिया) (सं.)परफेक्टइमेजेश,राजगढ़ रोड गुवाहाटी-3 पृष्ठ-156,159

6. बोरपुजारी, एस.के. और भुइयां, ए.सी. (एड) (1977), द पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ असम, लॉयर्स बुक स्टॉल, गुवाहाटी, असम

7. बोरुआ, ए.के. (1989), द लालुंग्स (तिवास), जनजातीय अनुसंधान संस्थान निदेशालय, गुवाहाटी, असम

8. काकती ढांडा, जोनबील मेला जन्म उतरन अरु संसार, तिवा जनगोष्ठिर भाषा-साहित्य संस्कृति (असमिया) (एड) परफेक्टइमेजेश, राजगढ़ रोडगुवाहाटी-3पृष्ठ -372

9. देवरी, एम., (1997), तिवासकलर समादी (डेकाचांग) अनुष्ठान (असमिया), तिवा साहित्य सभा, जगीरोड, असम

10. कलिता, डी. सी. और शर्मा, एच. (एड) (2010), द तिवास (लालुंग्स): प्रोफाइल ऑफ ए ट्राइब, प्रकाशन समिति, मोरीगांव कॉलेज, असम

11. सेनापति, बी., (1997), एटिटोर संधानोट, (असमिया), तिवा साहित्य सभा, जगीरोड, असम

12. सरमा ठाकुर, जी.सी., (1993), द लालुंग्स (तिवास), ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुवाहाटी, असम

13. सेनापति, जी. (1997), राहर रहियाल बरुआ अरु पासु राजा पूवली, (असमिया) तिवा साहित्य सभा, जगीरोड, असम